❍ 26 / 09 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *माया के तूफानों से डरे तो नहीं ?*

➢➢ *निश्चयबुधी बने और बनाया ?*

➢➢ *अकालतख्त पर बैठकर कर्मेन्द्रियो से सदा श्रेष्ठ कर्म किया ?*

➢➢ *ब्राह्मण कल्चर से प्यार रहा ?*

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *चारों ओर हलचल है, व्यक्तियों की, प्रकृति की हलचल बढ़नी ही है, ऐसे समय पर सेफ्टी का साधन है सेकण्ड में अपने को विदेही, अशरीरी वा आत्म-अभिमानी बना लेना। तो बीच-बीच में ट्रायल करो* एक सेकण्ड में मन-बुद्धि को जहाँ चाहे वहाँ स्थित कर सकते हैं! इसको ही साधना कहा जाता है।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

>> *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

✺ *"मैं पदमापदम भाग्यवान हूँ"*

〰✧ अपने को पद्मापदम भाग्यवान अनुभव करते हो? क्योंकि देने वाला बाप इतना देता है जो एक जन्म तो भाग्यवान बनते ही हो लेकिन अनेक जन्म तक यह अविनाशी भाग्य चलता रहेगा। ऐसा अविनाशी भाग्य कभी स्वप्न में भी सोचा था! असम्भव लगता था ना? लेकिन आज सम्भव हो गया। तो ऐसी श्रेष्ठ आत्मायें है - यह खुशी रहती है? *कभी किसी भी परिस्थिति में खुशी गायब तो नहीं होती! क्योंकि बाप द्वारा खुशी का खजाना रोज मिलता रहता है, तो जो चीज रोज मिलती है वह बढ़ेगी ना। कभी भी खुशी कम हो नहीं सकती।*

〰✧ क्योंकि खुशियों के सागर द्वारा मिलता ही रहता है। अखुट है। कभी भी किसी बात के फिकर में रहने वाले नहीं। *प्रापर्टी का क्या होगा, परिवार का क्या होगा? यह भी फिकर नहीं। बेफिक्र! पुरानी दुनिया का क्या होगा! परिवर्तन ही होगा ना। पुरानी दुनिया में कितना भी श्रेष्ठ हो लेकिन सब पुराना ही है। इसलिए बेफिक्र बन गये। पता नहीं आज है कल रहेंगे- नहीं रहेंगे - यह भी फिकर नहीं।*

〰✧ *जो होगा अच्छा होगा। ब्राह्मणों के लिए सब अच्छा है। बुरा कुछ नहीं। आप तो पहले ही बादशाह हो। अभी भी बादशाह, भविष्य में भी बादशाह। जब सदा के बादशाह बन गये तो बेफिक्र हो गये। ऐसी बादशाही जो कोई छीन नहीं सकता।* कोई बन्दक से बादशाही उडा नहीं सकता। यही खशी सदा रहे और

औरों को भी देते जाओ। औरों को भी बेफिक्र बादशाह बनाओ।

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

———————————————————

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ कोई भी किसी के वश हो जाता तो वश हुई आत्मा मजबूर हो जाती है और *मालिक बनने वाली आत्मा* कभी किसी से मजबूर नहीं होती, *अपने 'स्वमान' में मजबूत होते है।* कई बच्चे अभी भी कभी-कभी किसी-न-किसी कर्मन्द्रिय के वश हो जाते हैं, फिर कहते हैं - आज आँख ने धोखा दे दिया, आज मुख ने धोखा दे दिया, दृष्टि ने धोखा दे दिया।

〰✧ परवश होना अर्थात धोखा खाना और *धोखे की निशानी है - दु:ख की अनुभूति होना।* और धोखा खाना चाहते नहीं हैं लेकिन न चाहते हुए भी कर लेते हैं, इसको ही कहा जाता है - वशीभूत होना। दुनिया वाले कहते हैं - चक्कर में आ गये. चाहते भी नहीं थे लेकिन पता नहीं कैसे चक्कर में आ गये।

〰✧ आप स्वदर्शन चक्रधारी आत्मा किसी धोखे के चक्कर में नहीं आ सकती क्योंकि *स्वदर्शन चक्र अनेक चक्कर से छुडाने वाला है।* न सिर्फ अपने को, लेकिन औरों को भी छुडाने के निमित बनते हैं। अनेक प्रकार के दु:ख के चक्करों से बचने के लिए सोचते हैं - इस सृष्टि-चक्र से निकल जायें। लेकिन *सृष्टि

चक्र के अंदर पार्ट बजाते हुए अनेक दु:ख के चक्करों से मुक्त हो जीवनमुक्त स्थिति को प्राप्त कर सकते हैं* - यह कोई नहीं जानता है।

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

———————————————

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ *कर्मयोगी अर्थात् कर्म के समय भी योग का बैलेन्स।* लेकिन आप खुद ही कह रहे हो कि बैलेन्स कम हो जाता है। इसका कारण क्या? अच्छी तरह से जानते भी हो, नई बात नहीं है। बहुत पुरानी बात है। बापदादा ने देखा कि सेवा वा कर्म और स्व-पुरुषार्थ अर्थात् योगयुक्त। *तो दोनों का बैलेन्स रखने के लिए विशेष एक ही शब्द याद रखो-वह कौन सा? बाप 'करावनहार' है और मैं आत्मा, (मैं फलानी नहीं) आत्मा 'करनहार' हूँ। तो करन-'करावनहार', यह एक शब्द आपका बैलेन्स बहुत सहज बनायेगा।* स्व-पुरुषार्थ का बैलेन्स या गति कभी भी कम होती है, उसका कारण क्या? *'करनहार' के बजाए मैं ही कराने वाली या वाला हूँ, 'करनहार' के बजाए अपने को 'करावनहार' समझ लेते हो।* मैं कर रहा हूँ जो भी जिस प्रकार की भी माया आती है, उसका गेट कौन सा है? माया का सबसे अच्छा सहज गेट जानते तो हो ही - 'मैं'। तो यह गेट अभी पूरा बन्द नहीं किया है। ऐसा बन्द करते हो जो माया सहज ही खोल लेती है और आ जाती है। *अगर 'करनहार' हूँ तो कराने वाला अवश्य याद आयेगा।* कर रही हूँ कर रहा हूँ लेकिन कराने वाला बाप है। बिना 'करावनहार' के 'करनहार' बन नहीं सकते हैं। *डबल रूप से 'करावनहार' की स्मृति चाहिए। एक तो बाप

'करावनहार' है और दूसरा मैं आत्मा भी इन कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराने वाली हूँ। इससे क्या होगा कि कर्म करते भी कर्म के अच्छे या बुरे प्रभाव में नहीं आयेंगे। इसको कहते हैं-कर्मातीत अवस्था।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

────────────────────────

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- रूद्र ज्ञान यज्ञ के रक्षक, ब्राह्मण बन, गायन लायक बनना"*

➳ _ ➳ कलकल करते झरने का, मधुर संगीत सुनकर, मुझ आत्मा को... *अपने जीवन में सजे सातो गुणो के सुर याद आते है... कि शिव संगीतकार पिता ने मेरे जीवन में आकर... मेरे जीवन को कितना प्यारा दिव्य बनाकर... यूँ गायन योग्य बना दिया है.*. विकारो के बेसुर भस्म कर दिए है... और ज्ञान की वीणा संग, यादो के सुरीले तारो को छेड़...मुझे सतो प्रधानता का गीत सिखाया है... देहभान में बेसुरी हो गयी मुझ आत्मा को.. सातो गुण में कितना सुरीला बनाकर, विश्व स्टेज पर दिव्यता से सजाया है... अपने प्यारे बाबा के प्यार में डूबी हुई मै आत्मा.... प्यार का गीत, मीठे बाबा को सुनाने, सूक्ष्म वतन पहुंचती हूँ..."

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को ज्ञान रत्नों से भरपूर करते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... *शिव बाबा ने धरा पर आकर, आप बच्चों को अपनी

पलको से चुनकर, जो रूद्र ज्ञान यज्ञ रचा है.*.. उस यज्ञ के सच्चे रक्षक आप ब्राह्मण बच्चे हो... मीठे बाबा की याद में गुणवान और शक्तिवान बनकर... इस यज्ञ में अवगुणों को स्वाहा कर, गायन योग्य बनकर, सतयुग में मुस्कराते हो...."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा के ज्ञान रत्नों को अपनी झोली में समेटते हुए कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... मै आत्मा *अपने मीठे भाग्य पर कितना ना नाज करूँ... कि स्वयं भगवान ने मुझे अपनी फूलो सी गोद में बिठाकर, यूँ खुशियो में पुनः खिलाया है.*.. सारे विकर्मो से छुड़ाकर, मुझे देवताई श्रंगार से, फिर से सजाया है..."

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को अपनी आँखों का तारा बनाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... संगम के वरदानी समय में ईश्वर पिता के साथ... अथाह खजानो के मालिक बनकर, रूद्र ज्ञान यज्ञ के रक्षक बन रहे हो... अपनी *दिव्यता और पवित्रता से इस यज्ञ को सम्भाल कर... ईश्वर पिता के दिल में मणि सा सजकर मुस्करा रहे हो.*.. गुणो से सजकर, पूज्य बन रहे हो..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा अपने मीठे प्यारे भाग्य पर मुस्करा कर कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा... मै आत्मा स्वयं को ही भूल बेठी थी, आपने मेरे जीवन में आकर... *मुझे अपने प्यार में पवित्र बनाकर... दिव्य गुणो से महकाया है.*.. मुझ आत्मा को अपने साये तले रखकर... गायन योग्य बनाया है... मेरा खोया गौरव पुनः दिलाया है..."

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को विश्व परिवर्तन के महान कार्य में अपना सहयोगी बनाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... इस रूद्र ज्ञान यज्ञ में आप ब्राह्मण बच्चे ही गायन योग्य बनते हो... शिव पिता के यज्ञ की दिल जान से रक्षा करते हो... फिर *आप ही दिव्यता और पवित्रता की दौलत से, देवताई स्वर्ग का राज्य भाग्य पाते हो*..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा के महावाक्यों को अपने मन बुद्धि दिल में सजाकर कहती हूँ :-* "मीठे दुलारे बाबा मेरे... मै आत्मा आपकी मीठी गोद में आकर, काँटों से फूल बन गयी हूँ... *ईश्वरीय पालना में पलकर क्या से क्या हो गयी हूँ... वरदानो और शक्तियो से सजकर, गायन योग्य बन गयी हूँ.*.. और देवताई सुखो का अधिकार पा रही हूँ..."मीठे बाबा से बेहद की समझ लेकर मै आत्मा... अपने कार्य क्षेत्र पर आ गयी...

———————————————

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- माया के तूफानों से डरना नही है*"

➳ _ ➳ "सर्व शक्तियों को समय पर कार्य मे लगाने वाली मास्टर सर्वशक्तिवान आत्माओं के सामने माया के तूफान तोहफा बन जाते हैं" *बाबा के इन महावाक्यों को स्मृति में ला कर मास्टर सर्वशक्तिवान की सीट पर सेट हो कर सर्वशक्तियों का आह्वान करने और स्वयं को सर्वशक्ति सम्पन्न स्वरूप बनाने के लिये मैं सर्वशक्तिवान शिव बाबा की याद में मन बुद्धि को एकाग्र करती हूँ*। अशरीरी बन बाबा की याद में बैठते ही मैं अनुभव करती हूँ जैसे शिव बाबा अव्यक्त ब्रह्मा बाबा की भृकुटि में विराजमान हो कर मेरे सामने आ गए हैं

➳ _ ➳ बाबा की लाइट, माइट जैसे - जैसे मुझ आत्मा पर पड़ रही है वैसे - वैसे मैं अपने लाइट माइट स्वरूप में स्थित होती जा रही हूँ। *अपने लाइट माइट स्वरूप में स्थित हो कर अब मैं अनुभव कर रही हूँ कि जैसे बाबा मुझे अपनी और खींच रहें हैं और मैं डबल लाइट फ़रिशता बन स्वत: ही ऊपर की ओर उड़ रहा हूँ*। सूर्य, चांद, तारागणों से पार अन्तरिक्ष को भी पार करता हुआ उससे भी ऊपर मैं पहुंच गया फ़रिशतो की आकारी दुनिया सूक्ष्म लोक में।

➳ _ ➳ अब मैं देख रहा हूँ स्वयं को सूक्ष्म वतन में। मेरे सामने अव्यक्त बापदादा अष्ट शक्तियों के अलग - अलग स्वरूप में मुझे दिखाई दे रहें हैं। *अष्ट शक्तियों को मुझ में समाहित कर मुझे सर्वशक्ति सम्पन्न स्वरूप बनाने के लिए अब बापदादा एक - एक शक्ति से भरपूर अपनी शक्तिशाली किरणे मुझ फ़रिश्ते में प्रवाहित कर रहें हैं*।

➳ _ ➳ अपना सम्पूर्ण ध्यान इस नश्वर दुनिया से समेट कर मैं अपना संसार केवल एक शिव बाबा को बना सकूँ इसके लिए समेटने की शक्तिशाली किरणों से बाबा मुझे भरपूर कर रहें हैं। *अपनी सहनशक्ति से हर बात को सहन करते हुए हिम्मतवान बन हर परिस्थिति को मैं सहजता से पार कर सकूँ इसके लिए बाबा अब सहनशक्ति से भरपूर किरणे मुझ में प्रवाहित कर रहें हैं*।

➳ _ ➳ जैसे बापदादा सभी बच्चों की सभी बातों को स्वयं में समा लेते हैं। वैसे समाने की शक्ति से भरपूर किरणे मुझ में समाहित कर बाबा मुझमे हर बात को स्वयं में समाने का बल भर रहें हैं। *अपने सम्बन्ध सम्पर्क में आने वाली हर आत्मा को परख कर हर प्रकार के धोखे से मैं स्वयं को बचा सकूँ इसके लिए बाबा परखने की शक्ति से भरपूर किरणो से मुझे सम्पन्न बना रहे हैं*। माया के अति सूक्ष्म से सूक्ष्म रूप को पहचान कर उचित समय पर मैं उचित निर्णय ले सकूँ इसके लिए बाबा निर्णय करने की शक्ति से सपन्न किरणे अब मुझमे भर रहें हैं।

➳ _ ➳ विपरीत परिस्थिति में घबराने के बजाए उसका डटकर सामना करने के लिए बाबा अब सामना करने की शक्ति से मुझे भरपूर कर रहें हैं। *एक दो को सहयोग दे, संगठन को निर्विघ्न चलाने के लिए बाबा सहयोग की शक्ति से भरपूर किरणे मुझ में प्रवाहित कर मुझे सहयोगी आत्मा बना रहें हैं*। देह और देह के सम्बन्धो के विस्तार को समेट कर सबको आत्मिक स्वरूप में देखने का पाठ पक्का हो इसके लिए विस्तार को सार में समाने की शक्ति बाबा मुझे दे

रहें है।

➳ _ ➳ अपने आठ स्वरूपों से अष्ट शक्तियों को मेरे अंदर भरकर बाबा ने मुझे अष्ट शक्तियों से सम्पन्न कर दिया हैं। देह अभिमान में आने के कारण मुझ आत्मा में निहित अष्ट शक्तियाँ जो मर्ज हो गई थी वो आठों शक्तियाँ अब इमर्ज हो गई हैं। *बापदादा के आठों स्वरूपों से अष्टशक्तियों को स्वयं में भरपूर करके अब मैं सर्व शक्ति सम्पन्न स्वरूप बन कर वापिस साकारी दुनिया मे लौट आती हूँ।

➳ _ ➳ *अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित हो कर, मास्टर सर्वशक्तिवान की सीट पर सदा सेट रहते हुए, माया के तूफानों में मुरझाने के बजाए अब मैं समय और परिस्थिति के अनुसार उचित शक्ति का प्रयोग करके सहज ही माया के हर वार का सामना कर, माया पर विजय प्राप्त कर रही हूँ*।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं अकालतख्त पर बैठकर कर्मेन्द्रियों से सदा श्रेष्ठ कर्म कराने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं कर्मयोगी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा ब्राह्मण कल्चर से बहुत प्यार करती हूँ ।*
✺ *मैं ब्रह्मा बाप की प्यारी आत्मा हूँ ।*
✺ *मैं श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ 1. *अब मनोबल को बढ़ाओ। बेहद की सेवा जो अभी आप वाणी या संबंध, सहयोग से करते हो, वह मनोबल से करो।* तो मनोबल की बेहद की सेवा अगर आपने बेहद की वृत्ति से, मनोबल द्वारा विश्व के गोले के ऊपर ऊंचा स्थित हो, *बाप के साथ परमधाम की स्थिति में स्थित हो थोड़ा समय भी यह सेवा की तो आपको उसकी प्रालब्ध कई गुणा ज्यादा मिलेगी।*

➳ _ ➳ 2. आजकल के समय और सरकमस्टांश के प्रमाण अन्तिम सेवा यही मन्सा वा मनोबल की सेवा है। इसका अभ्यास अभी से करो। चाहे वाणी द्वारा वा संबंध सम्पर्क द्वारा सेवा करते हो लेकिन अब इस *मन्सा सेवा का अभ्यास अति आवश्यक है, साथ-साथ अभ्यास करते चलो।*

➳ _ ➳ 3. यह मन्सा सेवा वही रंगत दिखायेगी जो स्थापना के आदि में बाप की *मन्सा द्वारा रूहानी आकर्षण ने बच्चों को आकर्षित किया।* और मन्सा सेवा के फल स्वरूप अभी भी देख रहे हो कि वही आत्मायें अब भी फाउण्डेशन हैं। ड्रामा अनुसार यह बाप की मन्सा आकर्षण का सबूत है जो

कितने पक्के हैं। तो *अन्त में भी अभी बाप के साथ आपकी भी मन्सा आकर्षण, रूहानी आकर्षण से जो आत्मायें आयेंगी वह समय अनुसार समय कम, मेहनत कम और ब्राह्मण परिवार में वृद्धि करने के निमित्त बनेंगी।* वही पहले वाली रंगत अन्त में भी देखेंगे। जैसे आदि में ब्रह्मा बाप को साधारण न देख कृष्ण के रूप में अनुभव करते थे। साक्षात्कार अलग चीज है लेकिन साक्षात स्वरूप में कृष्ण ही देखते, खाते-पीते चलते थे।

➳ _ ➳ 4. *तो स्थापना में एक बाप ने किया, अन्त में आप बच्चे भी आत्माओंके आगे साक्षात देवी-देवता दिखाई देंगे।* वह समझेंगे ही नहीं कि यह कोई साधारण हैं। वही पूज्यपन का प्रभाव अनुभव करेंगे, तब बाप सहित आप सभी के प्रत्यक्षता का पर्दा खुलेगा। अभी अकेले बाप को नहीं करना है। बच्चों के साथ प्रत्यक्ष होना है। जैसे स्थापना में ब्रह्मा के साथ विशेष ब्राह्मण भी स्थापना के निमित्त बनें, ऐसे समाप्ति के समय भी *बाप के साथ-साथ अनन्य बच्चे भी देव रूप में साक्षात अनुभव होंगे।*

➳ _ ➳ 5. *अभी सभी अपने अनादि स्वरूप में एक सेकण्ड में स्थित हो सकते हो? क्योंकि अन्त में एक सेकण्ड की ही सीटी बजने वाली है। तो अभी से अभ्यास करो।* बस टिक जाओ। (ड्रिल कराई) अच्छा।

✺ *ड्रिल :- "मनोबल द्वारा बेहद की सेवा करने का अनुभव"*

➳ _ ➳ *चेतना को भृकुटि के मध्य में केन्द्रित करते हुए, बाह्य जगत, व्यक्त देह सबसे उपराम मैं अति सूक्ष्म ऊर्जा बिन्दु आत्मा हूँ...* समस्त देह में मुझ आत्मा से प्रकाश की किरणें फैल रही हैं... तत्वों से बनी यह देह धीरे-धीरे तत्वों में विलीन हो रही है... अब बच गयीं केवल मैं आत्मा, एक गहन सन्नाटा बाह्य सज्जां से उपराम, सम्पूर्ण साक्षी भाव धारण कर चलती हूँ... इस जगत से पार, तत्वों से पार, इस स्थूल संसार से पार अपने निजवतन की ओर... वह निराकारी दुनिया मुझे पुकार रही हैं... *अनुभव कर रही हूँ, मैं आत्मा स्वयं को इस निर्विकारी दनिया में, चारों तरफ लाल सनहरा प्रकाश... डेड साइंलेस, सामने

महाज्योती है* ज्ञान सूर्य बाबा से अनंत किरणें निकल मुझ आत्मा पर पड़ रही है...

➳ _ ➳ *महाज्योती सर्वशक्तिमान से सर्व शक्तियाँ मुझमें समा रही हैं... एक-एक शक्ति को अपने अन्दर समाते हुए अनुभव कर रही हूँ मैं आत्मा...* जैसे-जैसे एक-एक शक्ति मेरे अन्दर समा रही है, मुझ आत्मा का प्रकाश बढ रहा हैं... पवित्रता के सागर से पवित्रता की लहरें मुझ आत्मा में समा रही हैं... *जैसे-जैसे एक-एक पवित्र लहर अन्दर समा रही है... अन्दर का व्यर्थ रूपी, विकल्प रूपी किचड़ा समाप्त हो रहा है...* मैं आत्मा समर्थ बनती जा रही हूँ... मुझ आत्मा का शुद्धिकरण हो रहा है... *मुझ आत्मा में पवित्रता का प्रकाश बढ रहा है... इससे मुझ आत्मा का मनोबल बढ रहा है... सभी आन्तरिक शक्तियाँ जागृत हो रही है...*

➳ _ ➳ *निर्संकल्प स्थिति का अनुभव कर रही हूँ मैं आत्मा.... सभी व्यर्थ संकल्प विकल्पों से मुक्त एक शक्तिशाली स्थिति, भरपूरता का अनुभव मैं आत्मा कर रही हूँ...* अब मैं आत्मा भरपूर होकर, सर्व शक्तियों से सम्पन्न होकर अपनी दिव्य आभा बिखरते हुये अपना चमकीला ड्रेस धारण कर विश्व गलोब के ऊपर जहाँ से मैं इस संसार की हर आत्मा को देख रही हूँ... जिनके खुशियों के सूरज को ग्रहण लग गया है... वे दुख अशांति का जीवन जीने को मजबूर है... सुख-शांति की तलाश में भटक रही है... सच्चे प्यार, सच्ची खुशी को उनकी निगाहें तलाश कर रही हैं... *एक पल की शांति के लिए भी सब तरस रहे हैं...*

➳ _ ➳ *मैं विश्व कल्याणकारी फरिश्ता, शांति का फरिश्ता इस पूरे विश्व गलोब पर शांति की किरणों की वर्षा कर रहा हूँ...* हर आत्मा शांति की अनुभूति कर रही है... बाबा से मिला प्यार मैं फरिश्ता हर आत्मा भाई को दे रहा हूँ... *सभी आत्माएँ सच्चे ईशवरीय प्यार की अनुभूति कर रही है... उनके दिल में प्रभु प्यार उत्पन्न हो रहा है...* मैं पवित्रता का फरिश्ता इस पूरे विश्व गलोब के ऊपर पवित्रता के फूल वर्षा रहा हूँ... ये पवित्रता के फूल हर आत्मा

को मिल रहे है... *सुख शांति से उनका जीवन महक रहा है...* सभी सच्चे प्यार, सच्ची सुख-शांति की अनुभूति कर रहे हैं... मैं फरिश्ता सर्व आत्माओं को बाबा का सन्देश दे रहा हूँ... *सर्व आत्माओं को बाबा का सन्देश मिल रहा है... बाबा की सेवा में तीव्र गति से वृद्धि हो रही हैं...*

➳ _ ➳ अब मैं आत्मा देख रही स्वयं को कर्मक्षेत्र पर ब्राह्मण चोला धारण किए हुए... *मुझ आत्मा की श्रेष्ठ वृत्ति, शक्तिशाली मन्सा अनेक आत्माओं का कल्याण कर रही है...* सहज ही आत्माओं को सुख, शांति की अनुभूति करा रही है... वायुमंडल को पावरफुल बना रही है... *मैं आत्मा कर्म करते सेकंड में कभी आकारी, कभी निराकारी, और कभी साकारी स्वरूप धारण कर रही हूँ... मैं आत्मा लाइट हाऊस माइट हाऊस बन गयीं हूँ... जो भी आत्मा मेरे सामने आ रही हैं वे अपने असली स्वरूप का अनुभव कर रही है... खुश और हल्का अनुभव कर रही है* और अपने असली घर का साक्षात्कार कर रही है... वे लाइट और माइट का अनुभव कर रही है... *ईश्वरीय आकर्षण उन्हें आकर्षित कर रहा है...* और सच्चे सुख और शांति की अनुभूति वे आत्माएं कर रही है... और *वे भी अपने सच्चे पिता का परिचय पा रही है...* इस प्रकार बाबा की ये सेवा तीव्र गति से बढ़ रही है... और एक साथ अनेक आत्माओं का कल्याण हो रहा है... *शुक्रिया मीठू बाबा शुक्रिया...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔